मुझे अपना परिचय देते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है। मैं चार दशक पूर्ण कर चुका हूँ ।मेरी स्थापना डॉ0 ब्रजपाल सरन रस्तोगी के अथक प्रयासों से सन् 1973 में हुई । डॉ0 बी0पी0एस0 रस्तोगी एवं उनके सहयोगियों ने मेरे अस्तित्व के लिए दिन–रात एक कर दिया था । मेरी उन्नति के लिए उनके पास सकारात्मक सोच के साथ एक अडिग विश्वास था । उनके प्राचार्यात्व के दौरान मैं प्रगति मार्ग पर चलता गया । यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे डॉ0 एम0सी0 रेड्डी, माननीय कुलाधिपति राज्यपाल के दर्शन हुए जिन्होंने मेरे भवन का आधिकारिक उद्घाटन किया। उनके संरक्षण में मुझे स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी, उर्दू शिक्षण का नया उपहार मिला ।

सन् 1982 में सरकारी नीति के अनुसार मुझे डॉ0 रस्तोगी अपने एक कर्मठ एवं अनुभवी साथी डॉ0 विश्व अवतार जैमिनी के हाथों में सौंपकर सेवानिवृत्त हो गए । डॉ0 जैमिनी के 18 वर्ष के कार्यकाल में मैंने अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की, उनके संरक्षण में मुझे 1995 में अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र में एम0ए0 की सम्बद्धता प्राप्त हुई । उन्हीं के प्रयास से राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम इकाई मिलने का मुझे गौरव प्राप्त हुआ । राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी के रूप में मुझे नयी ऊँचाईयाँ प्रदान कीं ।

25 अगस्त 1998 को महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर माननीय कुलाधिपति एवं महामहिम राज्यपाल ने अपने कर–कमलों से मुझे आशीर्वाद दिया । उन्होंने मेरे परिसर मे एक नवीन ब्लॉक एवं मेरे संस्थापक आदरणीय डॉ0 वी0पी0एस0 रस्तोगी की प्रतिमा का अनावरण किया ।

डॉ0 विश्व अवतार जैमिनी की सेवानिवृत्ति के बाद 01 जुलाई 2000 को डॉ0 प्रदीप जौहरी ने मेरे प्रशासन की कमान संभाली । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं अपनी सफलता के स्तर बनाए हुए हूँ । मेरा मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है जब मैं अपने परिसर में नेट सफल अभ्यर्थी देता हूँ । हिन्दी व उर्दू में शत–प्रतिशत परिणाम देने के साथ अन्य विषयों में भी प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त करता हूँ । इसके बाद आती है 17 जुलाई 2009। यही वह तारीख है जब राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विद्वानता की पहचान बना चुके वर्तमान प्राचार्य प्रो0 हरबंश दीक्षित ने मेरी बागडोर अपने हाथ में ली । उनके आते ही यह महाविद्यालय न केवल शैक्षिक स्तर पर बल्कि तकनीकी स्तर पर भी दिनों दिन आगे बढ़ता जा रहा है । मुझे न केवल ड्राइंग व पेंटिंग और अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं संचालन के लिए मान्यता मिलीं बल्कि दूरस्थ शिक्षा केन्द्र उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद की भी मान्यता प्राप्त

हो गयी । इसके साथ ही छात्र/छात्राओं के शैक्षिक सुधार के लिए समान अवसर केन्द्र (निदेशक–डॉ0 मीना कौल, परामर्शक – डॉ0 प्रियंका गुप्ता), सेन्टर फॉर पर्सन्स विद स्पेशल नीड्स (निदेशक –डॉ0 विशेष गुप्ता) तथा उपचारात्मक शिक्षा केन्द्र (निदेशक – डॉ0 नरेन्द्र सिंह) के संचालन की भी मान्यता प्राप्त हुई और सत्र 2012–13 में सफलता पूर्वक इन केन्द्रों का संचालन हुआ । वर्तमान में समान अवसर केन्द्र डा0 विशेष गुप्ता, उपचारात्मक शिक्षा केन्द्र डा0 मुकेश चन्द्र गुप्ता एवं नेट कोचिंग केन्द्र डा0 रवीश कुमार द्वारा संचालित हो रहें हैं । उन्हीं के योग्य परामर्श व निर्देशन से एन0सी0सी0 की यूनिट की कमान डॉ0 प्रियंका गुप्ता से चलते हुए अब सुश्री इन्दिरा कश्यप के हाथों में आ गयी है । वहीं छात्र यूनिट की कमान क्रीड़ा–विभाग के प्रभारी डॉ0 मनीष भट्ट के हाथों में आने से छात्रों के चेहरों पर खुशी की लहर आ गई है। एन0एस0एस0 के क्षेत्र में वर्तमान में कार्यक्रम अधिकारी मेरी गति को बनाये हुए हैं। मेरे परिसर में महिला छात्रावास का भवन अपवनी ऊँचाइयाँ स्वयं बता रहा है ।

मेरे बौद्धिक शिक्षक शोध क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए हुए हैं । डॉ0 विशेष गुप्ता, डॉ0 मधुबाला सक्सेना, डॉ0 मीना कौल, डॉ0 मुकेश गुप्ता, डा0 प्रियंका गुप्ता, डॉ0 रवीश कुमार सफलतापूर्वक शोधार्थियों को अपने ज्ञान से फलीभूत कर रहे हैं ।

मेरे महाविद्यालय का समस्त बौद्धिक शिक्षक विभाग शोध पत्र, आलेखों, कहानियों, कविताओं व गज़लों की पुस्तक व अन्य समीक्षक ग्रन्थों के रूप में अपने प्रकाशन से मेरा नाम रोशन कर रहा है । कला–प्रदर्शनियों के द्वारा मेरे चित्र–कला विभाग का नाम आगे बढ़ रहा है । क्रीड़ा में छात्र विभिन्न खेलों में पदक प्राप्त करके मेरे क्रीड़ा विभाग का नाम उज्ज्वल कर रहे हैं ।

19 जनवरी 2014 यह दिन मैं कैसे भूल सकता हूँ । यह वही दिन है जब अत्यन्त उत्साही, ऊर्जावान एवं समर्पित श्री काव्य सौरभ रस्तोगी ने प्रबन्धक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निर्वहन करने का प्रण लेकर ''कार्य ही पूजा है'' को चरितार्थ करते हुए अपने पिता डॉ0 विश्व अवतार जैमिनी के ''विज़न'' को साकार करने के लिए अपने कार्य का श्री गणेश किया ।

22 मार्च 2015 को उ0प्र0 उच्च्य शिक्षा परिषद द्वारा सम्पोषित एक संगोष्ठी ग्रोइंग वॉयोलेंस अमंग यूथ का आयोजन समाजशास्त्र विभाग द्वारा किया गया । यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि इस संगोष्ठी में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री बलदेव भाई शर्मा, अवर सचिव डा0 आर0पी0एस0 यादव एवं संयुक्त

सचिव, उच्च शिक्षा, उ0प्र0 शासन डा0 अश्वनी गोयल ने आकर मेरा मान बढ़ाया।

उर्दू विभाग द्वारा 28 मार्च 2015 को ''निसार अहमद फारूकी – हयात शख्यिसत और फन'' तथा 26 मार्च 2016 को संगोष्ठियों का आयोजन किया गया । जमिया मिलिया, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं अन्य प्रतिष्ठित महाविद्यालयों से तमाम प्रोफेसर्स एवं स्कॉलर्स ने शिरकत की । डा0 सुधीर कुमार एवं श्री मनीष भट्ट द्वारा अपने **Major Research Project** सफलता पूर्वक पूरे किये जा चुके है । डा0 रवीश कुमार ने अपना **Minor Project** अभी हाल ही में पूरा किया है । **Project** की यह **Chain** जारी है । मेरे लिए खुशी की बात है कि डा0 प्रियंका गुप्ता को हिन्दी में **Minor Project UGC** द्वारा दिया गया है । डा0 मीना कौल ने डा0 मधुबाला सक्सैना, डा0 रवीश कुमार, डा0 असमा अज़ीज एवं डा0 संगीता गुप्ता के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका ''शब्द शिल्पी'' को सफलता पूर्वक शुरू किया है । उर्दू विभाग की अध्यक्षा डा0 असमा अज़ीज़ को उर्दू एकेडमी की तरफ से उनकी पुस्तक फरहंग–ए–कुलयात सौदा के लिये मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, मा0 अखिलेश यादव जी द्वारा नगद 5000/– रू0 की राशि व सम्मान पत्र देकर पुरूस्कृत किया है । मुझे विश्वास है कि अकादमिक गतिविधियों का यह सफर निरन्तर यूँ ही चलता रहेगा।

उर्दू विभाग के बी0ए0 के छात्र सुल्तान अज़हर ने विश्वविद्यालय में सर्वाधिक अंक लाकर मेरा मान बढ़ाया है । चित्रकला विभाग की छात्रा दीपिका शर्मा ने विश्वविद्यालय में एम0ए0 में सर्वाधिक अंक लाकर मेरा सीना चौड़ाकर दिया है । एन0सी0सी0 की छात्रा कु0 शबनम ने राजपथ पर मार्चपास्ट करके मेरा मान बढ़ाया है ।

सिंगापुर, दुबई, चेन्नई, ताशकन्द, नैपाल, श्रीलंका, मॉरीशस अब कोई सपने से नही लगते । डा0 विशेष गुप्ता, डा0 मीना कौल, डा0 मधुबाला सक्सैना ने देश में ही नहीं विदेशी धरती पर जाकर अपनी विद्वानता के परिचय से शिक्षा जगत को चौंका दिया है । डा0 नरेन्द्र सिंह ने **"How Fair is the Fair Sex"** विषय पर जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई में प्रदर्शनी लगाकर मुझे गौरवान्वित किया है । नवम्बर 2015 में उन्होंने **"Popular Culture"** विषय पर ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में अपनी एक और प्रदर्शनी से मंत्रमुग्ध किया है । डा0 रवीश कुमार, डा0 सुषमा गुप्ता एवं डा0 संगीता गुप्ता समय–समय पर अपनी प्रदर्शनियां लगाकर मुझे रोमांचित कर देते है ।

हिंदी विभाग के द्वारा 2010 में एक संगोष्ठी 'सूचना तकनीक एवं हिन्दी पत्रकारिता' का आयोजन किया गया ।

मेरे महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रभारी डॉ0 विशेष गुप्ता ने राष्ट्रीय सेवा योजना के एस0एल0ओ0 पद पर सुशोभित होकर मेरा मान बढ़ाया । वहीं उन्होंने अपनी शैक्षिक अमेरिका यात्रा से मेरे नाम को और ऊँचा उठाया है । राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों में उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड के स्वयं सेवकों का नेतृत्व कर मुझे अपार यश प्रदान किया है ।

सांस्कृतिक गतिविधियों में डॉ0 मीना कौल, डॉ0 मुकेश गुप्ता, डॉ0 प्रियंका गुप्ता, डॉ0 नरेन्द्र सिंह तथा डॉ0 संगीता गुप्ता का योगदान अविस्मरणीय है ।

मुझे गहरा सदमा पहुंचा जब मेरे कार्यालय अधीक्षक श्री पंकज शर्मा का 11.12.2013 को एवं चतुर्थ वर्ग कर्मचारी श्री राम भरोसे लाल का 28.410.2015 को निधन हो गया ।

अंग्रेजी विभाग की अध्यक्ष डा0 मधुबाला सक्सैना 30.06.2015 को अपना सेवाकाल पूर्ण करते हुए सेवानिवृत्त हुई । डा0 मधुबाला सक्सैना का योगदान मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा ।

तमाम मुश्किलों के बावजूद संघर्ष करते हुए मैं अपना NACC मूल्याँकन कराने में सफल हुआ ।

यह सनातन सत्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है । उसी के तहत ही महाविद्यालय प्रशासन में भी प्रशासनिक दायित्वों में क्रमिक परिवर्तन का क्रम गतिमान रहता है । विगत चार दशक में ऐसे कई अवसर आये जब मैं भी इस प्रशासनिक परिवर्तन के दौर से गुजरा । ऐसी ही एक तारीख 21 जुलाई 2016 इस सनातनी परिवर्तन की साक्षी बनी जब इस महाविद्यालय के वरिष्ठतम शिक्षक एवं प्रख्यात समाजशास्त्री डा0 विशेष गुप्ता ने प्राचार्य का कार्यभार संभाला। मुझे आज भी इन सभी तारीखों पर गर्व है । मुझे गर्व में अपने प्रशासनिक इतिहास जहां समायोजन के आधार पर मुझे निरन्तर समृद्धता की ओर जाने में मद्द मिली है ।

मेरे छात्र आदर्श अनुशासन का परिचय देते हुए ज्ञानार्जन कर रहें हैं ।

मुझे अपने प्रबन्ध तंत्र, स्टाफ व छात्रों पर गर्व है । मेरी उम्र जितनी बढ़ रही है उतना ही मैं और निखर रहा हूँ । भविष्य में मैं अपनी प्रगति को यथावत रखते हुए । निरन्तर चलता रहा हूँ चलता रहूँगा ।

डा0 सुधीर कुमार अरोड़ा
प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग